छुटकारे का इतिहास – भाग 6

अध्याय 40: पूर्ण सन्तुष्टिदायक मसीह

डॉ. डेविड प्लॉट

यदि आपके पास बाइबल है– और मेरी आशा है कि आपके पास है– तो मेरे साथ यूहन्ना अध्याय 6 निकालें। यूहन्ना अध्याय 6. एक पल में हम पद 25 पर आयेंगे। "हल्लेलूयाह। देश–देश के लोग गीत गायें। यीशु मसीह राजा है।" आज मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि ऐसे बहुत से देश हैं जो नहीं जानते कि यीशु मसीह राजा है। पिछले सप्ताह मैं एक देश में 120 लाख लोगों की एक जाति के बीच में था। इस जाति में 120 लाख लोग हैं और उनमें से लगभग 100 मसीह में विश्वासी हैं। अतः 11,999,900 लोग उस मार्ग पर चल रहे हैं जो अनन्त दण्ड की ओर जाता है और उनमें से अधिकाँश लोगों ने कभी यह सुना ही नहीं है कि इससे कैसे बचा जाए। यदि यह सुसमाचार सत्य है, और यदि हम वास्तव में विश्वास करते हैं तो हम उनके बीच में सुसमाचार को फैलाने के लिए अपने जीवनों और इस कलीसिया के संसाधनों को दे देंगे। आप इसे कर रहे हैं। आप इसे कर रहे हैं। एक सप्ताह पूर्व मैं पृथ्वी के सबसे बड़े सुसमाचार से वंचित द्वीप पर प्रचार कर रहा था। उस द्वीप पर सुसमाचार से वंचित लोगों की 52 जातियाँ रहती हैं।

उन 52 में से 48 के पास कलीसियाएँ नहीं हैं, पूरी जाति में, जिनमें से कुछ की संख्या लाखों में है, लेकिन कोई कलीसिया नहीं। बहुत सी जातियों में एक भी विश्वासी नहीं है या बहुत कम विश्वासी हैं। हम वहाँ रहने और कार्य करने वाले अपने कुछ भाइयों और बहनों के साथ समय बिता रहे थे। और उन में से दो बता रहे थे कि कैसे दो जातियों के लोग जो पिछले वर्ष पूरी तरह सुसमाचार से वंचित थे, उनमें लोगों ने मसीह पर विश्वास किया है, जो अपनी जाति में पहले विश्वासी हैं।

और अत्यधिक उत्साहजनक बात यह थी कि इन दो सेवकों ने बताया कि ये लोग, ये नये विश्वासी, अपनी जातियों में पहले विश्वासी ब्रूक हिल्स की कलीसिया की टीमों के वहाँ सेवा करने के फलस्वरूप विश्वास में आए। हम वहाँ सुसमाचार को फैलाने के लिए यहाँ कलीसिया चलाते हैं, हम यहाँ अपना जीवन और इस कलीसिया के संसाधन देते हैं ताकि जिन लोगों ने कभी यीशु के बारे में नहीं सुना है वे पहली बार उसके बारे में सुनकर हाँ कह सकें। और यह इसके योग्य है। हमें यह महसूस करना है कि यह इसके योग्य है क्योंकि ऐसी जातियों के लोगों तक पहुँचना आसान नहीं है।

120 लाख लोग, 100 विश्वासी और उनके बीच सुसमाचार का प्रचार करना अवैध है, और यदि उनमें से कोई मसीह में धर्मान्तरण करता हुए पकड़ा जाए, तो उसे सरकार के द्वारा नहीं बल्कि उन्हीं के पिता या भाई द्वारा ही मार दिया जाएगा। और उस द्वीप की उन 52 जातियों के लोग न केवल सुसमाचार पर विश्वास नहीं करते हैं, बल्कि उन्होंने कभी सुसमाचार सुना ही नहीं है। वे सुसमाचार को नहीं चाहते। उनके पास जाने से गर्मजोशी भरा स्वागत नहीं मिलेगा। तो, क्यों जाएँ?

हम अपने जीवनों को, अपने परिवारों को क्यों दें? उनके बीच में सुसमाचार को फैलाने के लिए इस कलीसिया के संसाधनों को क्यों दें? क्यों न इसे आरामदायक सुरक्षित बर्मिंघम में लगाया जाए? इस प्रश्न का उत्तर उस पद में है जिसे हम आज देखने वाले हैं। यूहन्ना अध्याय 6. इस अध्याय की शुरूआत में ही यीशु पाँच रोटी और दो मछलियों से 5,000 से अधिक लोगों को तृप्त करते हैं। स्वाभाविक है कि वह भीड़ को खींच रहा है, मुफ्त भोजन। उसके पीछे चलो। और इसलिए वह भीड़ से दूर जाता है।

वह अपने चेलों को भेजता है, उन्हें नाव में बैठाता है, कहता है, "समुद्र के बीच में जाओ," और वह अकेला एकान्त में एक पहाड़ पर प्रार्थना करने के लिए चला जाता है। और शाम का समय है। उसके चेले समुद्र के बीच में हैं। वह किनारे पर है, और वह अपने चेलों के पास पहुँचना चाहता है, और वह चहलकदमी करने का निर्णय लेता है, और वह लहरों पर चलता है। वह चेलों के निकट आता है। वे थोड़ा चकित हैं, परन्तु वह उनके साथ नाव में सवार होता है, और वे दूसरे किनारे पर पहुँच जाते हैं।

जब वे दूसरे किनारे पर आते हैं तो एक भीड़ उनके पास आती है, और यह वार्तालाप चलता है। यह एक लम्बा वार्तालाप है, और एक अर्थ में थोड़ा कठिन वार्तालाप है, परन्तु मैं चाहता हूँ हम इसे पढ़ें और फिर सोचें कि इस पद का क्या अर्थ है। अतः मेरे साथ यूहन्ना अध्याय 6 के पद 25 से आरम्भ करें:

> झील के पार जब वे उससे मिले तो कहा, हे रब्बी, तू यहाँ कब आया? यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, मैं तुम से सच सच कहता हूँ, तुम मुझे इसलिए नहीं ढूँढ़ते हो कि तुम ने आश्चर्यकर्म देखे, परन्तु इसलिए कि तुम रोटियाँ खाकर तृप्त हुए। नाशवान भोजन के लिए परिश्रम न

करो, परन्तु उस भोजन के लिए जो अनन्त जीवन तक ठहरता है, जिसे मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा; क्योंकि पिता अर्थात् परमेश्वर ने उसी पर छाप लगाई है। उन्होंने उससे कहा, परमेश्वर के कार्य करने के लिए हम क्या करें? यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, परमेश्वर का कार्य यह है कि तुम उस पर, जिसे उसने भेजा है, विश्वास करो। तब उन्होंने उससे कहा, फिर तू कौन सा चिन्ह दिखाता है कि हम उसे देखकर तेरा विश्वास करें? तू कौन सा काम दिखाता है? हमारे बापदादों ने जंगल में मन्ना खाया; जैसा लिखा है, उसने उन्हें खाने के लिए स्वर्ग से रोटी दी। यीशु ने उनसे कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि मूसा ने तुम्हें वह रोटी स्वर्ग से न दी, परन्तु मेरा पिता तुम्हें सच्ची रोटी स्वर्ग से देता है। क्योंकि परमेश्वर की रोटी वही है, जो स्वर्ग से उतरकर जगत को जीवन देती है। तब उन्होंने उससे कहा, हे प्रभु, यह रोटी हमें सर्वदा दिया कर।

यीशु ने उनसे कहा, जीवन की रोटी मैं हूँ: जो मेरे पास आता है वह कभी भूखा न होगा, और जो मुझ पर विश्वास करता है वह कभी प्यासा न होगा। परन्तु मैं ने तुम से कहा था कि तुम ने मुझे देख भी लिया है तौभी विश्वास नहीं करते। जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा, और जो कोई मेरे पास आएगा उसे मैं कभी न निकालूँगा। क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं वरन् अपने भेजने वाले की इच्छा पूरी करने के लिए स्वर्ग से उतरा हूँ; और मेरे भेजने वाले की इच्छा यह है कि जो कुछ उसने मुझे दिया है, उस में से मैं कुछ न खोऊँ, परन्तु उसे उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँ। क्योंकि मेरे पिता की इच्छा यह है कि जो कोई पुत्र को देखे और उस पर विश्वास करे, वह अनन्त जीवन पाए; और मैं उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँगा।

इसलिए यहूदी उस पर कुड़कुड़ाने लगे, क्योंकि उसने कहा था, जो रोटी स्वर्ग से उतरी, वह मैं हूँ। और उन्होंने कहा, क्या यह युसुफ का पुत्र यीशु नहीं, जिसके माता–पिता को हम जानते हैं? तो वह कैसे कहता है कि मैं स्वर्ग से उतरा हूँ? यीशु ने उनको उत्तर दिया, आपस में मत कुड़कुड़ाओ। कोई मेरे पास नहीं आ सकता जब तक पिता, जिसने मुझे भेजा है, उसे खींच न ले; और मैं उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँगा। भविष्यद्वक्ताओं के लेखों में यह लिखा हैः वे सब परमेश्वर की ओर से सिखाए हुए होंगे। जिस किसी ने पिता से सुना और सीखा है वह मेरे पास आता है। यह नहीं कि किसी ने पिता को देखा है; परन्तु जो परमेश्वर की ओर से है, केवल उसी ने पिता को देखा है। मैं तुम से सच सच

कहता हूँ कि जो कोई विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसी का है। जीवन की रोटी मैं हूँ। तुम्हारे बापदादों ने जंगल में मन्ना खाया और मर गए। यह वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरती है ताकि मनुष्य उस में से खाए और न मरे। जीवन की रोटी जो स्वर्ग से उतरी, मैं हूँ। यदि कोई इस रोटी में से खाए, तो सर्वदा जीवित रहेगा; और जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिए दूँगा, वह मेरा माँस है।

इस पर यहूदी यह कहकर आपस में झगड़ने लगे, यह मनुष्य कैसे हमें अपना मांस खाने को दे सकता है? यीशु ने उनसे कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ, और उसका लहू न पीओ, तुम में जीवन नहीं। जो मेरा मांस खाता और मेरा लहू पीता है, अनन्त जीवन उसी का है; और मैं उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँगा। क्योंकि मेरा मांस वास्तव में खाने की वस्तु है, और मेरा लहू वास्तव में पीने की वस्तु है। जो मेरा मांस खाता और मेरा लहू पीता है वह मुझ में स्थिर बना रहता है, और मैं उस में। जैसा जीवते पिता ने मुझे भेजा, और मैं पिता के कारण जीवित हूँ, वैसा ही वह भी जो मुझे खाएगा मेरे कारण जीवित रहेगा। जो रोटी स्वर्ग से उतरी यही है, उस रोटी के समान नहीं जिसे बापदादों ने खाया और मर गए; जो कोई यह रोटी खाएगा, वह सर्वदा जीवित रहेगा। ये बातें उसने कफरनहूम के एक आराधनालय में उपदेश देते समय कहीं।

उसके चेलों में से बहुतों ने यह सुनकर कहा, यह कठोर बात है; इसे कौन सुन सकता है? यीशु ने अपने मन में यह जान कर कि मेरे चेले आपस में इस बात पर कुड़कुड़ाते हैं, उनसे पूछा, क्या इस बात से तुम्हें ठोकर लगती है? यदि तुम मनुष्य के पुत्र को जहाँ वह पहले था, वहाँ ऊपर जाते देखोगे, तो क्या होगा? आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं; जो बातें मैं ने तुम से कही हैं वे आत्मा हैं, और जीवन भी हैं। परन्तु तुम में से कुछ ऐसे हैं जो विश्वास नहीं करते। क्योंकि यीशु पहले ही से जानता था कि जो विश्वास नहीं करते, वे कौन हैं, और कौन मुझे पकड़वाएगा। और उसने कहा, इसीलिए मैं ने तुम से कहा था कि जब तक किसी को पिता की ओर से यह वरदान न दिया जाए तब तक वह मेरे पास नहीं आ सकता।

> इस पर उसके चेलों में से बहुत से उल्टे फिर गए और उसके बाद उसके साथ न चले। तब यीशु ने उन बारहों से कहा, क्या तुम भी चले जाना चाहते हो? शमौन पतरस ने उसको उत्तर दिया, हे प्रभु, हम किसके पास जाएँ? अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं; और हम ने विश्वास किया और जान गए हैं कि परमेश्वर का पवित्र जन तू ही है। यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, क्या मैंने तुम बारहों को नहीं चुना? तौभी तुम में से एक व्यक्ति शैतान है। यह उसने शमौन इस्करियोती के पुत्र यहूदा के विषय में कहा था, क्योंकि वही जो बारहों में से एक था, उसे पकड़वाने को था।

आइए प्रार्थना करें। प्रभु, इन वचनों को समझना कठिन है, और इन वचनों को लागू करना कठिन है। जब आपने उन्हें कहा तो बहुत से लोग उल्टे फिर गए। केवल थोड़े से ही पुरूष बचे रहे जो आपके पीछे चलने के लिए सब कुछ छोड़ने को तैयार थे। और इसलिए आज हम कहते हैं कि हम भी चाहते हैं कि हमारी गिनती उन लोगों में हो, और आपके पीछे चलने के लिए हम सब कुछ छोड़ने को तैयार हैं। इसलिए हमारी प्रार्थना है कि आप हमें सिखाएँ कि उसका क्या अर्थ है और यह समझने में हमारी सहायता करें कि जीवन की रोटी के रूप में आपको जानने का क्या अर्थ है। यीशु के नाम में हम प्रार्थना करते हैं। आमीन।

एक अजीब पद्यांश है। हम ईमानदार बनें। मांस खाना और लहू पीना नरभक्षियों जैसा प्रतीत होता है, और आप सोचते हैं, "इसका क्या मतलब है?" और इस पद में मैं आपको तीन सत्य दिखाना चाहता हूँ। वे साहसी दावे हैं, परन्तु वे दावे हैं, सत्य, जिन पर आप विश्वास करेंगे तो इस संसार में आपका जीवन बिल्कुल अलग प्रतीत होगा। पहला सत्यः हमारी अभिलाषाओं को केवल यीशु पूर्ण कर सकता है।

हमारी अभिलाषाओं को केवल यीशु पूर्ण कर सकता है। स्पष्टतः यह सारा वार्तालाप भोजन से संबंधित है। भीड़ द्वारा पूछे जाने वाले पहले प्रश्न को देखें। वे कहते हैं, "तू यहाँ कब आया?" पद 25 में, और पद 26 में यीशु सीधे यथार्थ पर आता है। वह कहता है, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ, तुम मुझे इसलिए नहीं ढूँढ़ते हो कि तुम ने आश्चर्यकर्म देखे, परन्तु इसलिए कि तुम रोटियाँ खाकर तृप्त हुए।" दूसरे शब्दों में, तुम्हारे यहाँ आने का एकमात्र कारण यह है कि तुम भोजन खाकर तृप्त हुए। तुम तृप्त हुए, और अब तुम और चाहते हो। और आप जानना चाहते हैं कि सब क्या है। अब यीशु यह नहीं कहता है कि भोजन की उनकी लालसा बुरी है। वास्तव में, पद 27 में वह कहता है,

"नाशवान भोजन के लिए परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिए जो अनन्त जीवन तक ठहरता है।" और इसलिए वह यह नहीं कह रहा है कि उनके द्वारा भोजन की इच्छा रखना बुरा है। वह यह बता रहा है कि वे कैसे अपनी लालसा को पूरा करने का प्रयास कर रहे हैं। यहीं पर मैं चाहता हूँ कि आप यूहन्ना 6 में रूकें। इस स्थान को पकड़े रहें, और बाइबल की कहानी के आरम्भ में उत्पत्ति अध्याय 2 पर आएँ।

यूहन्ना 6 में अपने स्थान को पकड़े रहें। मेरे साथ एक मिनट के लिए उत्पत्ति 2 पर चलें। मैं जानता हूँ आप सोच रहे हैं, "डेव, हम पुराने नियम को पीछे छोड़ चुके हैं। याद रखो नये नियम में रहना अच्छा है।" हाँ, यह अच्छा है, और मैं यहाँ पर उसे जोड़ना चाहता हूँ जो हमने पुराने नियम में इस वर्ष पढ़ा और अब यहाँ नये नियम में पढ़ रहे हैं। इसलिए उत्पत्ति अध्याय 2 पर जाएँ, और मैं चाहता हूँ कि हम पद 15 को देखें। मैं आपको दिखाना चाहता हूँ कि कैसे बाइबल की कहानी के आरम्भ में ही परमेश्वर ने हमें लालसा करने के लिए रचा।

उसने हमें इच्छाओं, और आवश्यकताओं, और लालसाओं के साथ बनाया। और यह उत्पत्ति 2 में अदन की वाटिका में कई तरह से दिखाई देता है। मैं इसे आपके विशेष रूप से इसलिए दिखाना चाहता हूँ क्योंकि यह भोजन से संबंधित है। उत्पत्ति 2:15 कहता है, "तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया, कि वह उसमें काम करे और उसकी रक्षा करे। और यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है; पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खानाः क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।"

यहाँ आप वाटिका में एक जरूरतमन्द व्यक्ति को देखते हैं, जिसे भोजन की आवश्यकता है। और परमेश्वर ने उसे इसी प्रकार रचा है। कई बार हम अपने आप में सोचते हैं, अदन की वाटिका में जहाँ सब कुछ सिद्ध था वहाँ मनुष्य की कोई आवश्यकता नहीं थी।" यह सत्य नहीं है। निश्चित रूप से मनुष्य की आवश्यकताएँ थीं। मनुष्य को वायु, भोजन की आवश्यकता थी। बाद में उत्पत्ति 2 में हम, एक साथी की आवश्यकता को देखते हैं। मनुष्य के लिए अकेला रहना अच्छा नहीं था, अतः, परमेश्वर ने मनुष्य को लालसाओं, इच्छाओं, और खाली पेट के साथ बनाया जिसे भरना था।

उसकी कुंजी यहाँ है। ऐसा नहीं है कि वाटिका में मनुष्य की कोई आवश्यकताएँ नहीं थीं। तस्वीर यह है कि अदन की वाटिका में मनुष्य की आवश्यकताएँ थीं, और उसकी पूर्ति केवल परमेश्वर द्वारा, उसकी निर्धारित रीति से की जानी थी। अतः परमेश्वर ने हमें लालसा रखने के लिए बनाया और फिर, दूसरा, हमारा सृष्टिकर्ता हमारी लालसाओं को सन्तुष्ट करता है। हमारी लालसाएँ हमें उस परमेश्वर की ओर ले जाने के लिए बनाई गई हैं जो हमारी लालसाओं को सन्तुष्ट करता है, हमारी आवश्यकताओं को पूरा करता है, जो हमें उत्पत्ति 3 में समस्या की ओर ले जाता है।

एक पल के लिए मैं यहाँ उत्पत्ति अध्याय 2 और 3 पर रूकना चाहता हूँ। उत्पत्ति 3:6 पर जाएँ। जब सर्प आकर आदम और हव्वा को उस वृक्ष के फल को खाने के लिए भरमाता है जिसके बारे में परमेश्वर ने कहा था, 'उस में से न खाना,' मैं चाहता हूँ आप इसके वर्णन को सुनें। उत्पत्ति 3:6 को देखें, "अतः जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने के लिए अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिए चाहने योग्य भी है; तब उसने उसमें से तोड़कर खाया, और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया।" क्या आप उस पूरे वचन में लालसाओं की भाषा को देख और सुन रहे हैं? उसने देखा वृक्ष का फल खाने के लिए अच्छा था। देखने में मनभाऊ था। वह चाहने योग्य था, और वह उसे खाती है, और वह भी उसे खाता है। और पहली बार हम देखते हैं कि मनुष्य की अभिलाषाएँ अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसे सृष्टिकर्ता से दूर ले जाती हैं।

यहाँ पाप के कार्य से न चूकें। पाप का कार्य, अपने सृष्टिकर्ता के अलावा अपनी सन्तुष्टि के लिए संसार की वस्तुओं की ओर देखना, यह सोचते हुए कि सृष्टिकर्ता से अलग, बाहर कुछ अच्छा है। वास्तविकता यह है कि कुछ भी अच्छा नहीं है यदि वह परमेश्वर की ओर से नहीं है। कुछ भी अच्छा नहीं है यदि वह परमेश्वर की ओर से नहीं है। यह अच्छा प्रतीत हो सकता है। यह मनभाऊ प्रतीत हो सकता है। वह चाहने योग्य प्रतीत हो सकता है, परन्तु वह बुरा है। इसके बारे में सोचें। हर पाप जो आप या मैं करते हैं। हम पाप इसलिए करते हैं क्योंकि हम सोचते हैं कि यह अच्छा होगा।

हम सोचते हैं यह चाहने योग्य होगा। हम सोचते हैं यह मनभाऊ होगा चाहे यह वासना का पाप हो, या लोभ, भौतिकता, व्यभिचार, गप्पबाजी, चाहे कोई भी पाप जो हम करते हैं क्योंकि हम अपने आप को मनाते हैं कि हमें निश्चय है कि इस मार्ग पर चलना अच्छा है, इसे करना चाहने योग्य होगा। इसे करना मनभाऊ होगा। इसे सोचना, इसे खरीदना, इसे पाना अच्छा होगा, और फिर हम

उसे प्राप्त करते हैं और अन्त में हमें अहसास होता है कि यह बुरा है और यह नाश करता है। पाप का कार्य, हम अपने आप को सन्तुष्ट करने के लिए सृष्टिकर्ता के बाहर संसार की वस्तुओं की ओर देखते हैं और यही पाप की त्रासदी है। अन्त में हम उससे दूर हो जाते हैं जिसके लिए हमारी आत्मा लालसा करती है और जिसकी उसे सबसे अधिक आवश्यकता है।

उत्पत्ति 3 में यही होता है। वे सोचते हैं कि वे सृष्टिकर्ता से अलग सन्तुष्टि को पा सकते हैं। वे ऐसा करते हैं और वे अन्त में उससे दूर हो जाते हैं जिसकी उनकी आत्माओं को सर्वाधिक आवश्यकता थी। अब यूहन्ना अध्याय 6 पर वापस आएँ और यहाँ जो हो रहा है उसका यही सन्दर्भ है। यूहन्ना 6 में लोगों की भीड़ यीशु के पीछे चल रही है, और वे उसकी तुलना मूसा से कर रहे हैं, क्योंकि मरूभूमि में मूसा ने लोगों को स्वर्ग से रोटी दी थी।

और इसलिए वे सोच रहे हैं, "क्या यीशु मूसा के समान ही एक भविष्यद्वक्ता है? क्या यह वही है जो आने वाला था, जो हमें स्वर्ग से रोटी देने वाला था?" आप देखें पद 32 में वे क्या कह रहे हैं। यीशु उनसे कहता है, "मूसा ने तुम्हें वह रोटी स्वर्ग से न दी, परन्तु मेरा पिता तुम्हें सच्ची रोटी स्वर्ग से देता है।" तुम रोटी की खोज में हो। तुम मूसा जैसे एक व्यक्ति की खोज में हो। यथार्थ यह है कि तुम्हें रोटी देने वाला मूसा न था। वह सृष्टिकर्ता, तुम्हारा परमेश्वर था, जो तुम्हें रोटी दे रहा था, इसी कारण पद 33 में वह एक आश्चर्यजनक कथन कहता है।

वह कहता है, "परमेश्वर की रोटी वही है जो स्वर्ग से उतरकर जगत को जीवन देती है।" वह इस पूरी तस्वीर को व्यक्तिगत बनाता है। उन्होंने कहा, "हमें वह रोटी दे," और यीशु यह अद्भुत कथन कहता है। मैं आपको उत्साहित करूंगा कि पद 35 में आप इसे रेखांकित करें। यीशु ने उनसे कहा, "जीवन की रोटी मैं हूँ।" इसका शाब्दिक अर्थ है मैं परमेश्वर का प्रबन्ध हूँ। मैं ही तुम्हारी आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करता हूँ। मैं ही तुम्हारी लालसाओं को पूरा करता हूँ। यह एक चौंकाने वाला सत्य है।

सच्ची सन्तुष्टि दान में नहीं दाता में पाई जाती है। परमेश्वर ने हमें इस प्रकार रचा है कि हम उसमें सन्तुष्ट रहें। वस्तु में नहीं, परन्तु उस में। यह विशाल है। इसी कारण मैं तथाकथित सम्पन्नता के सुसमाचार से घृणा करता हूँ जो कि सुसमाचार है ही नहीं। कुछ पाने के लिए परमेश्वर के पास आओ। परमेश्वर पर भरोसा रखो और तुम्हें वस्तुएँ मिलेंगी। नहीं। आप परमेश्वर

को पाने के लिए परमेश्वर के पास आते हैं, और आप परमेश्वर को पाने के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं। और वह इस संसार की सारी वस्तुओं के योग से भी बेहतर है। वह किसी लक्ष्य को पाने का माध्यम नहीं है।

वही लक्ष्य है, जिसके लिए हमारी आत्मा लालसा रखती है और इच्छा करती है। सच्ची सन्तुष्टि परमेश्वर के दानों से बढ़कर परमेश्वर में पाई जाती है। अब, सोचें कि यह हमारे जीने के तरीके को किस प्रकार पूर्णतः बदल देता है, क्योंकि अब हम जानते हैं कि इस संसार की सारी सर्वोत्तम वस्तुओं का योग भी उस सन्तुष्टि की तुलना में कुछ नहीं है जो परमेश्वर में पाई जाती है। और यहीं पर हमें अहसास होता है, "वाह, यह सम्पन्नता का सुसमाचार हम से बाहर नहीं है। यह कुछ ऐसा है जो हमारे अन्दर ही है।" हम ईमानदार बनें। अपने जीवनों को देखें। अपनी कलीसियाओं, अपनी संस्कृति, और उन वस्तुओं को देखें जिनसे हम अपने जीवनों को भरते हैं जैसे कि परमेश्वर हमारे लिए पर्याप्त नहीं है। हमें अधिक, बड़ी, और बेहतर वस्तुओं की आवश्यकता है। नहीं बिल्कुल नहीं। हमारे पास परमेश्वर है। इन सब को दूर कर दो और परमेश्वर में हमारे पास सब कुछ है। जब लोग इस प्रकार जीते हैं तो हम अपने आस–पास के संसार से अलग दिखते हैं, और त्रासदी यह है कि जब हम अपने आस–पास के लोगों के समान जीते हैं तो हम अपने चारों ओर के संसार को दिखाते हैं कि परमेश्वर पर्याप्त नहीं है। सच्ची सन्तुष्टि दानों में नहीं, दाता में पाई जाती है।

बहनो और भाइयो हमारी गहनतम लालसा वस्तु के लिए नहीं बल्कि व्यक्ति के लिए है। फिर भी, हम अपनी चाहत को बहुत सी वस्तुओं में खोजते हैं। मैं ने यहाँ पर कुछ कथनों को कहा है। वे नये कथन नहीं हैं। उनका मैं ने पहले भी प्रयोग किया है, परन्तु मैं ने सोचा, "यह उन्हें बताने का अच्छा अवसर है क्योंकि ये कथन यहाँ की कुछ सच्चाईयों को अभिव्यक्त करते हैं।" मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि ये कथन अधिकृत पवित्र वचन नहीं हैं, परन्तु वे उन सच्चाईयों पर प्रकाश डालने में सहायता करते हैं जिन्हें हम अधिकृत पवित्रशास्त्र में देख रहे हैं।

अतः यह पहला कथन जोनाथन एडवर्ड्स से है, एक ताकतवर कथन कि कैसे हमारी लालसाएँ बहुत सी अन्य वस्तुओं में फँसी हैं और परमेश्वर के लिए हमारी लालसा कितनी मन्द हो सकती है। इस कथन को सुनें। एडवर्ड्स ने कहा, "हमारी बाहरी चाहतें, हमारी सांसारिक अभिलाषाएँ, हमारे लक्ष्य, हमारी साख, और हमारे मानवीय संबंध, इन सारी बातों के लिए हमारी लालसा अत्यधिक,

हमारी भूख तीव्र, और हमारा प्रेम गर्मजोशी से भरा है। और इन बातों के बारे में हमारे दिल कोमल, संवेदनशील होते हैं, अत्यधिक प्रभावित होते हैं, अत्यधिक चिन्तित और जुड़े हुए होते हैं।
अपनी हानियों से हम निराश होते हैं और किसी सांसारिक सफलता या समृद्धि के बारे में आनन्द मनाते हैं, परन्तु जब आत्मिक विषयों की बात आती है तो हम कितने ठण्डे होते हैं, हमारे दिल कितने बोझिल और कठोर होते हैं। हम मसीह यीशु में परमेश्वर के अनन्त प्रेम की अनन्त ऊँचाई, और लम्बाई, और चौड़ाई के बारे में बैठकर सुन सकते हैं, कि कैसे उसने अपने असीम प्रिय पुत्र को दे दिया, और फिर भी हम बिना प्रभावित हुए ठण्डे होकर बैठे रहते हैं। यदि हम किसी बात के बारे में उत्साहित होना चाहते हैं तो क्या वह हमारे आत्मिक जीवन के बारे में नहीं होनी चाहिए? क्या स्वर्ग में या पृथ्वी पर कुछ ऐसा है जो यीशु मसीह के सुसमाचार से बढ़कर प्रेरणादायक, उत्साहजनक, प्रिय और चाहने योग्य है? हमें अत्यधिक नम्र होना चाहिए कि हम जितने हैं उससे अधिक भावनात्मक रूप से प्रभावित नहीं होते हैं।"

हम इसके बारे में इतने उत्तेजित हो सकते हैं कि खेल को कौन जीतेगा, और हम इसके बारे में अत्यधिक निराश हो सकते हैं कि कौन खेल में हारता है, और हमारी भावनाएँ उन बातों के बारे में अत्यधिक तीव्र हो सकती हैं जिनका कोई महत्व नहीं है। एक है जो महत्वपूर्ण है, और वह केवल हमारे बौद्धिक विश्वास के ही नहीं, बल्कि भावनात्मक प्रेम के भी योग्य है। हमारी लालसा, और हमारा आनन्द, और हमारी सन्तुष्टि उसमें पाई जाती है। और खतरा यह है कि यदि हम सावधान नहीं है तो हम अपने पेट को भरेंगे। हम अपने आपको वस्तुओं, मनोरंजन, और इस संसार की उन बातों में लगा देंगे जिनका कोई महत्व नहीं है। और जब मसीह की बारी आती है तो हमारे पेट इतने भरे होते हैं कि थोड़ा ही स्वाद शेष रहता है, और मैं आपको आज बुलाना चाहता हूँ जो हर प्रकार की अभिलाषाओं, मनोरंजन, और साधन, ओर इस संसार की वस्तुओं से घिरे हैं, कि हम अपने पेट को मसीह की सन्तुष्टि से भरें ताकि जब इस संसार की बात आए तो हमारे पास उसके लिए थोड़ा ही स्वाद बचा हो। केवल यीशु ही हमारी लालसाओं को पूर्ण कर सकता है। अब, समस्या यह है कि हम पापी हैं, और हम में परमेश्वर से बढ़कर संसार की लालसा करने की प्रवृत्ति है। तो हम उसे कैसे बदलें?

दूसरा सत्य। केवल यीशु ही हमारी लालसाओं को पूर्ण कर सकता है। दूसरा, केवल यीशु ही हमारे स्वाद को बदल सकता है। यहीं पर यह वास्तव में अच्छा हो जाता है। पद 28 में, वे यीशु से कहते हैं, "परमेश्वर के कार्य करने के लिए हम क्या करें?" यथार्थ में वे पूछ रहे हैं, "परमेश्वर तक पहुँचने

के लिए हम क्या करें? हमें बता परमेश्वर किन कार्यों की मांग करता है और हम उन्हें करेंगे।" वह यहूदी तरीका था। अनन्त जीवन के मार्ग में उन कार्यों को करने के सही सूत्र को खोजना शामिल है जिनसे परमेश्वर प्रसन्न होता है।

परिणाम व्यवहार और आचरण को बदलने का एक सतही, बाहरी प्रयास था जो अन्तहीन प्रतीत होता था। पद 29 में यीशु कहता है, "यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, परमेश्वर का कार्य यह है।" वह एक आवश्यक बात कह रहा है। "परमेश्वर का कार्य यह है कि तुम उस पर, जिसे उसने भेजा है, विश्वास करो।" बात यह है। जब हमारी पापपूर्ण लालसाओं और इच्छाओं की बात आती है तो हमारे पास यहाँ दो विकल्प हैं। पहला, हम अपने कार्यों को बदलने के लिए कठिन मेहनत करके पाप पर जय पाने का प्रयास कर सकते हैं। हम अपने आप को बदलने और अनुशासित करने के लिए कार्य कर सकते हैं। संसार के सारे धर्म इसी पर निर्मित हैं। पिछले सप्ताह मुझे याद है मैं एक मुस्लिम बहुल क्षेत्र में एक मस्जिद में खड़ा एक व्यक्ति से बात कर रहा था जो बार–बार कह रहा था, "तुम्हें यह करना है। अल्लाह का सम्मान करने के लिए यह कार्य करना हमारा कर्त्तव्य है। परमेश्वर का सम्मान करने के लिए हमें इन कार्यों को करना जरूरी है।" वहाँ कार्यों की एक सूची थी।

संसार के जिस हिस्से में मैं था वहाँ बौद्ध धर्म का प्रभाव था। बौद्ध धर्म में इस संसार पर जय पाने के लिए अष्टांग मार्ग है, और अनुशासन के कोई 200–300 नियम हैं। और यह चलता रहता है, चलता ही रहता है। ईश्वरों को प्रसन्न करने के लिए तुम्हें यह करना है, परमेश्वर का अनुग्रह पाने के लिए तुम्हें यह करना है। और यदि हम सावधान नहीं हैं तो मसीहियत भी विभिन्न बातों के मिश्रण में गिर सकती है। मैं कलीसिया में जाता हूँ, और प्रार्थना करता हूँ, और मैं एक अच्छा व्यक्ति हूँ, दसवाँश देता हूँ, सभ्य हूँ, और यही सब है। परमेश्वर प्रसन्न हो जाएगा। परन्तु यह मसीह के सम्पूर्ण बिन्दू से चूक जाएगा, क्योंकि ठीक है हमारे पास यह विकल्प है।

हम अपने कार्यों को बदलने के लिए कठिन मेहनत करके पाप पर जय पाने का प्रयास कर सकते हैं। इसे मानो, उसे मानो, और अच्छे बनो। या, दूसरा, हम अपनी लालसाओं को बदलने के लिए मसीह पर भरोसा करके पाप पर जय पा सकते हैं, मसीह पर भरोसा करना। एक बात जरूरी है, एक कार्य, मुझ पर विश्वास करो। "मेरे पास आओ," पद 35 में वह कहता है। शेष अध्याय में, "मुझे खाओ। जैसा तुम भोजन को ग्रहण करते हो मुझ से ग्रहण करो। जैसे तुम पानी को ग्रहण करते हो

मुझ से ग्रहण करो। मुझ पर भरोसा रखो। मुझ पर विश्वास करो। मैं तुम्हें तृप्त करूंगा। मैं तुम्हें सन्तुष्ट करूंगा। मुझ भरोसा रखो कि मैं तुम्हें पूरी तरह बदल दूँ।"

जब मसीह तुम्हारी सन्तुष्टि है, जब आप विश्वास करते हैं कि वह पूर्ण–सन्तुष्टिदायक है तो वह आपके जीने के तरीके को बदल देगा। इसके बारे में सोचें। इसके बारे में सोचें। हमारा विश्वास, हम पाप के सुखों पर कैसे जय पायेंगे? यह एक बड़ा सवाल है। हम सब पाप से युद्ध करते हैं। आप पाप से लड़ते हैं। मैं पाप से लड़ता हूँ। हम सब पाप से लड़ते हैं। हम सन्तुष्टि पाने के लिए परमेश्वर की बजाय संसार की बातों की ओर देखते हुए लड़ते हैं। तो उसे हम कैसे बदलें? यूहन्ना अध्याय 6 में यीशु जो कह रहा है उसके आधार पर मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि हम मसीह को उसकी सन्तुष्टि की सामर्थ से हम पर जय पाने की अनुमति देने के द्वारा पाप के सुखों पर जय पाते हैं।

हम उसके पास आते हैं। हम उसमें विश्वास करते हैं। हम उस पर भरोसा करते हैं। हम उसे खाते हैं। इसी प्रकार पाप पर जय पाते हैं। यीशु ने इसे बताया, "जो मेरे पास आता है वह कभी भूखा न होगा, और जो मुझ पर विश्वास करता है वह कभी प्यासा न होगा।" यह गलातियों 5:24 है। हमारे पास वहाँ जाने का समय नहीं है, परन्तु मैं आपको प्रोत्साहित करूंगा कि आप उसे लिख लें। पौलुस इस सत्य को बहुत ही स्पष्टता से व्यक्त करता है। गलातियों 5:24. वह कहता है, "और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है।"

अतः आप मसीह के हैं। जब आप मसीह में आते हैं तो पापमय प्रकृति की शरीर की लालसाओं और अभिलाषाओं को क्रूस पर चढ़ा दिया जाता है, जब आप मसीह में आते हैं। यह कैसे होता है? जब आप मसीह में आते हैं, और आप मसीह की सन्तुष्टि को अनुभव करते हैं तो फिर आप को इस संसार की वस्तुओं की लालसा नहीं रहती है। आप पाप और इस संसार की वस्तुओं के भूखे और प्यासे नहीं होते हैं क्योंकि मसीह में आप सन्तुष्ट हैं, और आप जानते हैं कि कुछ बेहतर है।

कल मैं, और दोनों बच्चे बाहर जाने वाले थे। मैं उन से कहता हूँ, "तुम दोपहर के भोजन के लिए जहाँ भी जाना चाहो आज हम वहाँ चलेंगे।" और उनकी आँखों में चमक आ गई। और बर्मिंघम, अल्बामा में अच्छे भोजन के सारे संभावित स्थानों में से उन्होंने तुरन्त एक स्थान को बताया। और

मेरा अनुमान है कि आप इसे जानते हैं। मैं आपको उसका सुराग दूँगा। यह 'मैक' से शुरू होता है और डोनाल्ड्स से समाप्त होता है। एक साथ, "हमें मैकडोनाल्ड्स से हैमबर्गर चाहिए।"
मैं ने पूछा, "क्या तुम दूसरे स्थानों के बारे में जानते हो?" हमें उनकी सूची बनानी पड़ी। वे नहीं माने और हम मैकडोनाल्ड्स में गए। और मैं उनके लिए हैमबर्गर लाया, और अपने लिए हैमबर्गर लाया। और हम लोग बैठ गए, और मैं ने उनके बर्गर को निकाल कर उनके सामने रखा, और मैं ने अपना बर्गर निकाला। और वे खाना शुरू करते हैं, और उनके चेहरे मुस्कान से दमक रहे हैं। मैं आपको बताता हूँ जब मैं बर्गर को खाता हूँ तो मेरा चेहरा क्या नहीं कर रहा है। मैं मैकडोनाल्ड्स पर ज्यादा नहीं खाता हूँ, और मैं अपने बर्गर से एक टुकड़ा खाकर सोचता हूँ, "यह क्या है? यह तैयार किया गया मांस है। यह असली मांस नहीं है।"

और मैं उनकी ओर देखता हूँ, और वे सोचते हैं कि यह अच्छा है। क्यों? उन्हें यह इतना अच्छा क्यों लगता है? क्योंकि उन्होंने कभी अच्छे, रसदार मांस को नहीं चखा है। उन्हें नहीं पता कि वे किस से चूक रहे हैं क्योंकि यदि उन्होंने उसे चखा होता तो वे इसके साथ इस प्रकार नहीं मुस्कराते। यही यथार्थ है। जब आप बेहतर का स्वाद चखते हैं तो फिर आप वापस नकल के पीछे नहीं जाते हैं। आप वास्तविक के अलावा और किसी से सन्तुष्ट नहीं होते हैं, और इस जीवन में पाप को जीतने का, उस पर जय पाने का यही तरीका है।

विश्वास करें कि मसीह बेहतर है। मसीह का स्वाद लें। मसीह के पास आएँ, और आप देखेंगे कि उसके जैसा अच्छा और कुछ नहीं है। आप सोचते हैं अश्लीलता अच्छी है? आप सोचते हैं व्यभिचार अच्छा है? आप सोचते हैं लोभ, धन, अधिक संपत्ति, और बेहतर साधन, ताकत और मनुष्यों की प्रशंसा अच्छी है? आप तैयार किए गए मांस से सन्तुष्ट हो रहे हैं, असली स्वाद तो अभी बाकी है। और तस्वीर यह है, आप कब इसे महसूस करते हैं, जब आप अपनी सन्तुष्टि के रूप में मसीह को खाते हैं। इस सप्ताह आप पाप और इस संसार की बातों की परीक्षा में पड़े, और शायद आपने इसका थोड़ा स्वाद चखना शुरू कर दिया होगा।

जब आप अपनी सन्तुष्टि के रूप में मसीह को जानते हैं, जब आप उसके साथ उसके वचन में हैं, और प्रार्थना में उसके साथ चलते हैं, और निरन्तर आराधना में उसका आनन्द लेते हैं, और आप कुछ और स्वाद चखने लगते हैं और आपको महसूस होने लगता है, "यह बेकार है। यह घृणित है। इसकी उससे तुलना नहीं की जा सकती।" आप दौड़ते हैं। आप मन फिराते हैं, और वापस उसके

पास लौटते हैं। और सम्पूर्ण मसीही जीवन मसीह को खाना सीखने की प्रक्रिया बन जाता है, और जितना अधिक आप यह करते हैं उतना ही अधिक आप इस संसार की बातों से दूर जाते हैं। एक श्रेष्ठ सन्तुष्टि से आपको जीत लिया जाता है। अतः यही हमारी प्रार्थना है। हे परमेश्वर, सुख की हमारी लालसा को बढ़ा।

हमारी सुख की लालसा को बढ़ा। कहें, "इसका क्या मतलब है?" यह सी. एस. लुईस की ओर से मेरा संभवतः पसन्दीदा कथन है, जो बिल्कुल उसी बात पर प्रकाश डालता है जो यूहन्ना 6 यहाँ बता रहा है। सी. एस. लुईस ने कहाः

> यदि अधिकाँश आधुनिक मनों में यह विचार है कि अपनी भलाई की इच्छा रखना और ईमानदारी से उसका आनन्द लेने की आशा रखना बुरी बात है तो मैं मानता हूँ कि यह विचार कान्त और स्ताईकियों की ओर से आया है, और यह मसीही विश्वास का हिस्सा नहीं है। यदि हम सुसमाचारों में प्रतिज्ञा किए गए अत्यन्त बड़े प्रतिफलों की प्रकृति को देखें तो हमें प्रतीत होगा कि हमारा प्रभु देखता है कि हमारी लालसाएँ अत्यधिक मजबूत नहीं बल्कि अत्यधिक कमजोर हैं। हम आधे मन वाले प्राणी हैं जो शराब, और काम वासना, और लक्ष्यों से खेल रहे हैं जबकि हम से अनन्त आनन्द की पेशकश की गई है। एक अनजान बालक के समान जो एक झुग्गी में जाकर मिट्टी से खेलना चाहता है क्योंकि वह कल्पना नहीं कर सकता है कि समुद्र के किनारे छुट्टी मनाने की पेशकश का क्या अर्थ है। हम बहुत आसानी से खुश हो जाते हैं।

इसका क्या मतलब है? इससे बढ़कर, यहाँ यूहन्ना 6 का क्या अर्थ है? यदि आप व्यभिचार में जी रहे हैं, यदि आप अश्लीलता में डूबे हैं, यदि आपका जीवन अगली और बड़ी वस्तु के लिए, अगली और बड़ी तरक्की के लिए लोभ से भरा है, यदि आप उन बातों से खुश होते हैं तो आपकी लालसाएँ कमजोर हैं। आप जल्दी खुश हो जाते हैं। आपको स्वर्ग, अनन्त आनन्द की पेशकश की गई है और आप थोड़े से कीचड़ से ही प्रसन्न हो जाते हैं। इसलिए परमेश्वर के वचन के आधार पर मैं आपको स्वर्ग और अनन्त आनन्द की ओर बुलाना चाहता हूँ, कि आप मसीह पर भरोसा रखें, उसमें सन्तुष्टि पाएँ और इस प्रक्रिया में इस संसार में पापमय लालसाओं की जंजीरों से मुक्त हो जाएँ। वह बेहतर है। हे परमेश्वर हमें नये स्वाद, नई लालसाएँ दे, कि हम अपने अन्तिम और अनन्त

सुख को आप में पा सकें। केवल यीशु ही इस कार्य को कर सकता है। उस पर विश्वास करें। उस पर भरोसा करें।

लेकिन आप इसे कैसे जानते हैं? यह एक साहसी दावा है। इस संसार के सारे सर्वोत्तम साधनों को परे कर दें क्योंकि मसीह बेहतर है। आप इसे कैसे जानते हैं? तीसरा सत्य, केवल यीशु ही हमारी लालसाओं को तृप्त कर सकता है; केवल वही हमारे स्वाद को बदल सकता है, और केवल यीशु ही, तीसरा, हमारी सन्तुष्टि की गारण्टी दे सकता है। पद 35 में उसने कहा, "जीवन की रोटी मैं हूँ। जो कोई मेरे पास आता है वह कभी भूखा न होगा। और जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह कभी प्यासा न होगा।" यीशु कह रहा है, "तुम मेरे पास आओ और तुम कभी भी प्यासे न रहोगे।"

मसीह में सन्तुष्टि का अनन्त सोता पाया जाता है। पद 27 में उसके वचनों के अनुसार, वह नाशमान भोजन नहीं देता है। वह ऐसा भोजन देता है तो सदा के लिए है, और वह इसके बारे में बार–बार और बार–बार बात करता है। वह कहता है, "मैं अनन्त जीवन देने आया हूँ। और वह कभी छीना न जाएगा। अन्तिम दिन मैं उसे फिर जिला उठाऊँगा। तुम इस भोजन को खाओ – उन्होंने उस भोजन, रोटी को खाया जो मूसा ने उन्हें दी और वे मर गए। तुम मुझे खाओ, और तुम नहीं मरोगे। इस गारण्टी के आधार के बारे में सोचें।

एक, पिता की पहल। पद 37 में वह कहता है, "जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा, और जो कोई मेरे पास आएगा उसे मैं कभी न निकालूँगा।" यह उन छह स्थानों में से पहला है जहाँ यीशु बताता है कि कैसे पिता लोगों को उसकी ओर खींच रहा है। आप पद 44 को देखें, "कोई मेरे पास नहीं आ सकता जब तक पिता, जिसने मुझे भेजा है, उसे खींच न ले।" यह एक आश्चर्यजनक तस्वीर है। यीशु कहता है, "पिता लोगों को मेरी ओर बुला रहा है।" इसके बारे में सोचें।

सृष्टिकर्ता, सर्वोच्च परमेश्वर, उससे आपको सन्तुष्ट करने के बारे में और कौन जानता है? आप? और कौन जानता है कि मैं कैसे सन्तुष्ट हो सकता हूँ? क्या मैं बेहतर जानता हूँ? नहीं। जिसने मुझे रचा, मुझे आकार दिया, केवल वही जानता है कि मुझे कैसे सन्तुष्ट किया जाए, और वह मुझे खींचता है। वह मुझे लुभाता है। यह आश्चर्यजनक अनुग्रह है। यद्यपि मैं इस संसार की सारी बातों

और वस्तुओं के पीछे भागता रहा हूँ और मैं ने अपना प्रेम और स्नेह उन्हें दिया है लेकिन स्वर्ग में विराजमान परमेश्वर ने अपने अनुग्रह और सर्वोच्च पहल में मेरी और आपकी खोज की। पिता की पहल, पुत्र का आज्ञापालन।

यीशु कहता है, "क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं वरन् अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिए स्वर्ग से उतरा हूँ; और मेरे भेजनेवाले की इच्छा यह है कि जो कुछ उसने मुझे दिया है, उस में से मैं कुछ न खोऊँ, परन्तु उसे अन्तिम दिन फिर जिला उठाऊँ।" दूसरे शब्दों में, "पिता तुम्हें खींच रहा है, और मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि ऐसा हो।" यीशु कह रहा है, "मेरे आने का उद्देश्य मेरे पिता की इच्छा को पूरा करना है। मेरे पिता की इच्छा है कि वह मनुष्यों को अपनी ओर खींचे।"

पिता की पहल, पुत्र का आज्ञापालन, और अन्त में पुनरूत्थान की प्रतिज्ञा। वह कहता है, "अन्तिम दिन मैं उसे फिर जिला उठाऊँगा। यही मेरे पिता की इच्छा है" – पद 40– "कि जो कोई पुत्र को देखे और उस पर विश्वास करे, वह अनन्त जीवन पाए; और मैं उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँगा।" आप कैसे जानते हैं कि यह गारण्टी सत्य है? जब जीवन समाप्त होता है, और सन्तुष्टि बनी रहती है, तो यह अच्छी बात है। जब आप आखरी साँस लेते हैं, और उस समय भी सन्तुष्टि का अनुभव कर रहे हैं, जब जीवन में आपसे सब कुछ, यहाँ तक कि आपकी साँस भी आप से वापस ली जा रही है और उस समय भी आप सन्तुष्ट हैं तो यह एक अच्छी गारण्टी है।

और वह इसे कैसे कह सकता है? इसके बारे में सोचें। यीशु ने अपनी मृत्यु में हमारे उद्धार का प्रबन्ध किया है। इस पद्यांश के शेष भाग में, यीशु बताना शुरू करता है कि कैसे वह अपनी देह और अपने लहू को देगा – बहुत से लोगों ने कहा है, "क्या यह आदमखोरी है?" ऐसे पद्यांशों के कारण पहली सदी के मसीहियों पर नरभक्षी होने का दोष लगाया गया था। जब तक तुम मेरा मांस न खाओ और मेरा लहू न पीओ तुम में जीवन नहीं। यीशु आदमखोरी के बारे में बात नहीं कर रहा है। वह अपने चेलों को उसे खाने के लिए प्रोत्साहित नहीं कर रहा है। वह यहाँ पर कैथोलिकवाद के बारे में भी बात नहीं कर रहा है। कलीसियाई इतिहास में बहुत से लोगों ने कहा है कि यहाँ पर यीशु कह रहा है, "जब हम प्रभु भोज करते हैं तो हम वास्तव में मसीह की देह को खाते और उसके लहू को पीते हैं," और यहाँ पर तस्वीर यह नहीं है। यीशु आदमखोरी या कैथोलिकवाद के बारे में बात नहीं कर रहा है। वह यहाँ पर क्रूस पर मृत्यु के बारे में बात कर रहा है। वह उस

वीभत्स यथार्थ के बारे में बता रहा है कि मेरे आपके लिए परमेश्वर से सन्तुष्टि को पाने का एकमात्र मार्ग परमेश्वर से मेल करना है। यह सही है।

अपने पाप में हम परमेश्वर से दूर भाग गए हैं। अपनी पवित्रता में केवल वही हमें सन्तुष्ट कर सकता है। तो हमें उसके पास वापस कैसे लाया जा सकता है, विशेषतः जब पाप की मजदूरी– उत्पत्ति 3:6, उत्पत्ति 2 के आधार पर– मृत्यु हो? और यीशु इस प्रकार सन्तुष्ट करेगा। यूहन्ना 6 में वह कहता है, "मैं आऊँगा, और मैं अपनी देह हो दूँगा, और मैं अपना लहू बहाऊँगा। और जिस मृत्यु से तुम्हें मरना था वह मैं अपने ऊपर ले लूँगा। तुम्हारे पाप की मजदूरी को मैं अपने ऊपर ले लूँगा, और तुम्हारे पाप के लिए मरने के द्वारा मैं तुम्हारे लिए उद्धार का प्रबन्ध करूंगा।"

मानवीय इतिहास के मंच पर केवल यीशु ही इस साहसी दावे को कर सकता है क्योंकि केवल वही हमारे पापों के लिए मरने के उपयुक्त था, और केवल उसी ने हमारे पापों की कीमत को चुकाया है, हमारे पापों की मजदूरी को चुकाया है। और न केवल अपनी मृत्यु में कीमत चुकाई। उसने अपनी मृत्यु में हमारे लिए उद्धार दिया है, और अपने पुनरूत्थान में वह हमारे पापों के ऊपर जयवन्त हुआ है। वह मरा, और फिर जी उठा। इसी कारण वह चार बार कहता है, "मैं उसे अन्तिम दिन फिर जिला उठाऊँगा।" इसी कारण वह तीन बार कहता है, "मेरे पास आओ तुम्हें अनन्त जीवन मिलेगा। तुम सदा तक जीवित रहोगे।"

यह रूचिकर बात है जब कोई बता रहा है कि वे कैसे मरेंगे और साथ ही सदा के लिए जीवित भी रहेंगे। और इसके संभव होने का एकमात्र मार्ग उसके पुनरूत्थान के कारण है, और वास्तविकता यह है कि यीशु ने क्रूस पर पाप और मृत्यु को जीत लिया, वह कब्र में से जी उठा है इसलिए वह हर स्थान के सारे लोगों से कह सकता है, "मेरे पास आओ। मुझ पर विश्वास करो। मुझ पर भरोसा करो, और तुम्हारी सन्तुष्टि इस जीवन में एक भोजन के साथ समाप्त न होगी। तुम्हारी सन्तुष्टि सदा तक बनी रहेगी।"

और यहाँ पर यह पूरी तरह साफ हो जाता है। अब हम इस संसार के बह जाने वाले सुखों के लिए नहीं जीते हैं, वे सब बह जाने वाले हैं। इस संसार द्वारा दिया जाने वाला प्रत्येक सुख, प्रत्येक पाप जिसकी परीक्षा में यह संसार हमें डालता है– और बात यह है, खतरनाक क्या है? इस संसार की बातें हमें लुभाती हैं, और वे वायदे करती हैं, और कुछ हद तक, एक पल के लिए, हमें सन्तुष्ट

भी करती हैं। परन्तु वे स्थाई नहीं हैं, और यह अहसास महत्वपूर्ण है कि वे सदा तक स्थिर नहीं रहेंगे।

इस संसार के सुखों से लुभाया जाने वाला प्रत्येक किशोर इसे जाने। यह सब बह जाने वाला है। वे स्थाई नहीं हैं। इस संसार के सुखों से लुभाए जाने वाले प्रत्येक विद्यार्थी, यह सब बह जाने वाला है। हर पुरूष और स्त्री के लिए, यह सब बह जाने वाला है। वे बहने वाले हैं। वे स्थाई नहीं हैं। वे अल्पकालिक हैं। केवल एक ही सुख और सन्तुष्टि स्थाई है और वह मसीह है। इसलिए अब हम इस संसार के बह जाने वाले सुखों के लिए नहीं जीते हैं। क्यों नहीं? क्योंकि हमने मसीह में पूर्ण सन्तुष्टि को पा लिया है।

और जब हमें यह महसूस होता है, और जब हमें ठीक यहीं पर यह महसूस होता है, जब आप इस पर विश्वास करते हैं, तो आप अपना जीवन बर्मिंघम और संसार भर में सुसमाचार को फैलाने के लिए दे सकते हैं चाहे आपको कोई भी कीमत क्यों न चुकानी पड़े, क्योंकि आप जानते हैं। आप जानते हैं आपका जीवन हमारी संस्कृति में उच्च–स्तरीय मसीहियत की सीमाओं से बढ़कर किसी कार्य के लिए रचा गया है। आपका जीवन एक बहुत बड़े उद्देश्य के लिए रचा गया है। आपका जीवन उसमें सन्तुष्टि पाने और उसकी महिमा को सब लोगों में फैलाने के लिए रचा गया है।

अब हम आने वाले संसार में अनन्त सुख के लिए जी रहे हैं। अब हम इस संसार के लिए नहीं जी रहे हैं। हम बर्मिंघम, अल्बामा या इस संसार में किसी दूसरे स्थान के लिए नहीं जी रहे हैं। यह संसार हमारा घर नहीं है। हम यहाँ पर अधिक से अधिक निर्माण या संग्रह या खोज नहीं कर रहे हैं। हम यहाँ के लिए नहीं जीते हैं। हम वहाँ के लिए जीते हैं। हम उस स्थान के लिए जीते हैं जहाँ मसीह की स्तुति में हमें अनन्त आनन्द मिलेगा। और आप इस पर विश्वास करते हैं, और आप उसकी महिमा को फैलाने के लिए यह सब दे देंगे, क्योंकि आप जानते हैं मेरा घर ले लो, मेरी जमीन ले लो, मेरा जीवन ले लो यह महत्वपूर्ण नहीं है। मेरे पास मसीह है, और मुझे केवल वही चाहिए, और यहाँ तो मैं वैसे पल भर के लिए हूँ।

और मेरे पास उसमें आने का अनन्त आनन्द है। अतः सी. एस. लुईस ने कहा, "सारा आनन्द स्वतः ही स्तुति में बहता है।" मैं एक क्षण के लिए यहाँ रूकना चाहूँगा। कई बार हम सोचते हैं, "यदि स्वर्ग पूर्णतः सिद्ध होगा तो क्या इसका मतलब यह नहीं है कि वह पूरी तरह ऊबाने वाला होगा।"

हम ऊँचे शब्दों में ऐसा नहीं कहते हैं जैसा मैं ने कहा, परन्तु हम सोचते हैं, "वास्तव में, क्या यह सब इसके लायक है?" अब सुनें। सी. एस. लुईस को सुनें, "सारा आनन्द स्वतः ही स्तुति में बहता है। संसार स्तुति से गूँज रहा है, प्रेमी अपनी प्रेमिकाओं की प्रशंसा कर रहे हैं, पाठक अपने प्रिय कवि की प्रशंसा कर रहे हैं, पैदल चलने वाले गाँव की प्रशंसा कर रहे हैं, खिलाड़ी अपने प्रिय खेल की प्रशंसा कर रहे हैं। मेरा विचार है कि हम जिसका आनन्द लेते हैं उसकी प्रशंसा करने से खुश होते हैं क्योंकि स्तुति आनन्द को केवल अभिव्यक्त ही नहीं करती बल्कि उसे पूर्ण करती है। यह इसकी नियुक्त पूर्णता है।"

तो इसका क्या अर्थ है? सी. एस. लुईस यहाँ क्या कह रहा है? मेरा विचार है कि यीशु यहाँ यूहन्ना 6 में अनन्त जीवन की तस्वीर दे रहा है। इसलिए इस स्तर पर इसके बारे में सोचें। आपकी एक प्रिय फुटबॉल टीम है, और आपको वह टीम पसन्द है, और आप वहाँ खड़े होकर चिल्ला रहे हैं, ताली बजा रहे हैं। और यह केवल इस कारण नहीं है कि आप यह अभिव्यक्त करना चाहते हैं कि आप उस टीम को कितना अधिक चाहते हैं। वास्तविकता यह है कि यथार्थ अभिव्यक्ति में आनन्द है। हमारी संस्कृति में लोग बेसहारा होने के कारण बारिश में खड़े नहीं होते हैं। यह इस कारण है क्योंकि वे प्रशंसा की अभिव्यक्ति का आनन्द ले रहे हैं।

मैं हेदर से अपने विवाह के बारे में सोचता हूँ। मेरे लिए यह कहना, "तुम खूबसूरत हो, और मैं तुम से प्यार करता हूँ," हाँ, यह इसकी एक अभिव्यक्ति है, परन्तु इसे कहना भी आनन्दमय है। और परमेश्वर की स्तुति की तस्वीर किसी टीम या पत्नी या पति से कहीं बेहतर है। परमेश्वर, उसकी असीम खूबसूरती, और अद्भुत महिमा में, जब स्तुति की बात आती है तो यह केवल उसकी अभिव्यक्ति नहीं है कि वह कौन है। यह आनन्द लेना है। यह वो सुख है जो उसको महिमा, आदर, और स्तुति देने से हमें मिलता है। यह उसकी ओर हमारे प्रेम का बहाव है, और स्वर्ग की तस्वीर मसीह की स्तुति में अनन्त आनन्द की है।

सदा–सर्वदा के लिए, हमेशा के लिए हमारा स्नेह उसके लिए हो जो असीम सुन्दर, और अनन्त रूप से अद्भुत है। जिसने अपने अनुग्रह में मसीह के आज्ञापालन के द्वारा हमें अपने पास बुलाने की पहल की, और हमारे लिए यह जानना संभव बनाया है कि केवल वही है जो हमारी लालसाओं को तृप्त कर सकता है, हमारे स्वाद को बदल सकता है, और जो हमारी सन्तुष्टि की गारण्टी दे सकता है। वास्तव में, वह पूर्ण–सन्तुष्टिदायक मसीह है।